B.A.(P)-I HINDI-D UNIT 10

विषय: नागार्जुन (सिन्दूर तिलकित भाल, अकाल और उसके बाद, तीन दिन तीन रात)

1-विषय

2-विषय-क्षेत्र

3- विषय-प्रवेश

4- विषय-प्रतिपादन

5-विवेचन

6-निष्कर्ष

7- अभ्यास

8- रचनात्मक-प्रश्न

9-रचनात्मक योगदान

10-संदर्भ

2-विषय-क्षेत्र:-

नागार्जुन विषय एवम् विषयी दोनों ही स्तर पर प्रयोगधर्मी रचनाकार हैं। कभी प्रगतिशीलता के माध्यम से, कभी सामाजिक सरोकारों के प्रति प्रतिबद्धता से, कभी धरती के रोम-रोम में बैठे धरती पुत्र की पीड़ा तो कभी उसकी जीवन्तता के चित्रण से नागार्जुन की प्रयोगधर्मिता लक्षित होती है। नागार्जुन अपनी परम्परा से शक्ति सिंचित करते हुए, ऐतिहासिक बोध और विवेक का प्रयोग करते हुए अपने समकालीनों से संवाद करते हैं एवं भविष्य की पीढ़ी के लिए रचनाधर्मिता की राह खोलते हैं।

विषय क्षेत्र:- नागार्जुन लोकहृदय के कवि हैं। लोक जीवन से उपजीं उनकी रचनाएँ जन-मन की संवेदनाओं का चित्र खींचती हैं, जनता से संवाद करती हैं जन परंपरा को खंगालती है, जन-मन के विद्रोह को रेखांकित करती हैं।

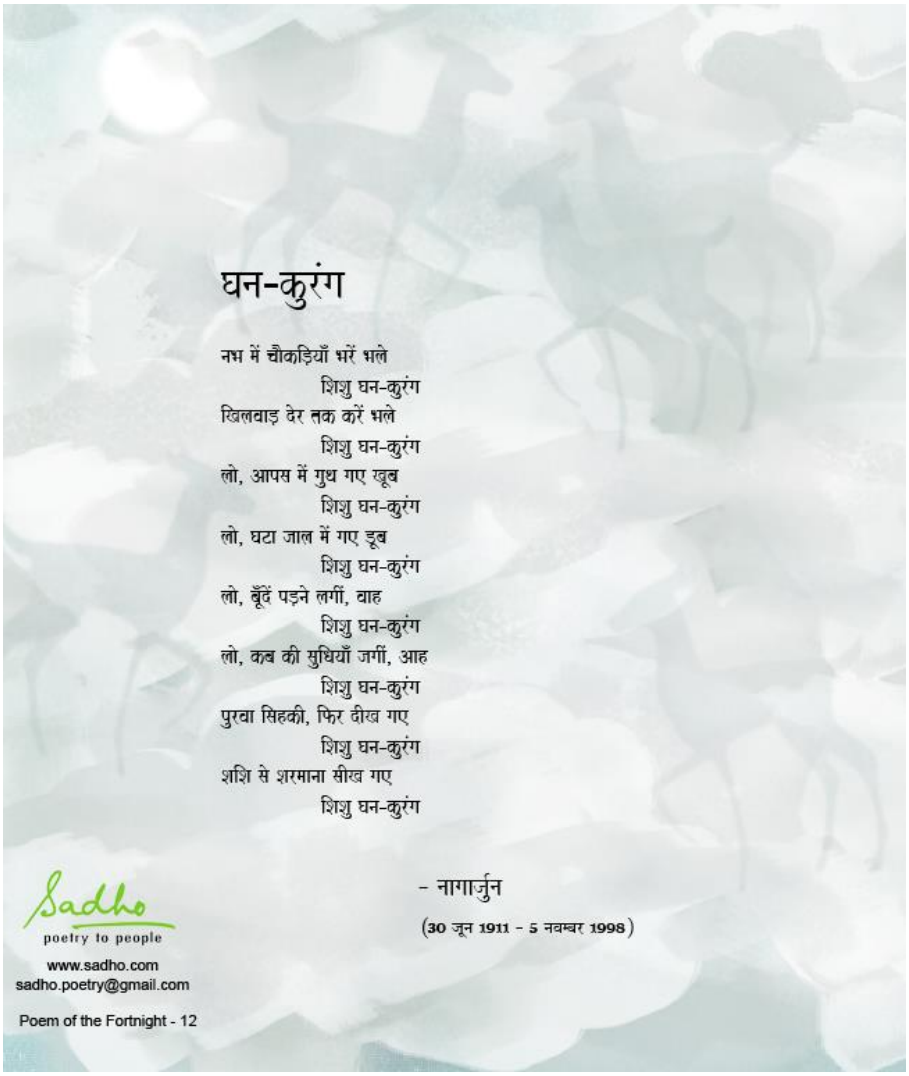

जीवन परिचय:- नागार्जुन का जन्म सन् 1911 के जून माह में बिहार के दरभंगा जिले के सतलखा क्षेत्र में हुआ। इनका जन्म ननिहाल में हुआ और कुछ समय बाद वे अपने पिता के गाँव तरौनी चले गए। माता-पिता सामान्य मध्यवर्गीय परिवार से सम्बद्ध थे। पिता का नाम गोकुल मिश्र और माता का नाम श्रीमती उमा देवी था। शिव जी के नाम पर इस बालक का नाम बैद्यनाथ रखा गया। बाल्यावस्था में ही माता का देहावसान होने के कारण बूआ ने इनका पालन-पोषण किया। पिता का स्वभाव यायावरी था

अत: घर परिवार की जिम्मेदारी निर्वाह कर पाने में वे असमर्थ अनुभव करते थे। ऐसे में मित्रों की सलाह पर बालक को शिक्षा दिलाने के लिए संस्कृत पाठशाला में भेजा गया जिसका उद्देश्य था-पुरोहिताई के माध्यम से जीविकोपार्जन के लिए तैयार करना।

आरम्भिक शिक्षा के पश्चात् आगे की शिक्षा इन्होंने कलकत्ता से प्राप्त की। कुछ समय के लिए सहारनपुर में अध्यापन कार्य भी किया।

नागार्जुन का विवाह 18 वर्ष की आयु में ही हो गया। यद्यपि वह अभी विवाह करना नहीं चाहते थे। विवाह के पश्चात् भी वह बहुत अधिक समय तक परिवार के साथ न रह सके। श्रीलंका में बौद्ध धर्म व दर्शन संबंधी अध्ययन ने उन्हें बहुत अधिक प्रभावित किया। यहीं उन्होंने बौद्ध धर्म की दीक्षा ली व अपना नाम रखा - नागार्जुन। वही नागार्जुन जिस नाम से उन्हें समस्त हिन्दी साहित्य का पाठक जानता और पहचानता है।

नागार्जुन ने 'यात्री' नाम से भी मैथिली में रचनाएँ लिखी। मैथिली भाषी साहित्य बाबा नागार्जुन को 'वैदेह' के नाम से भी याद करता रहा है। देह से मुक्त सभी के मन की पीड़ा को समझने वाला, अनन्त पथ का पथिक वास्तव में 'वैदेह' ही हो सकता है- मिथिला की मिट्टी से उपजा मिट्टी की खुश्बू को सब तक पहुँचाने वाला कवि।

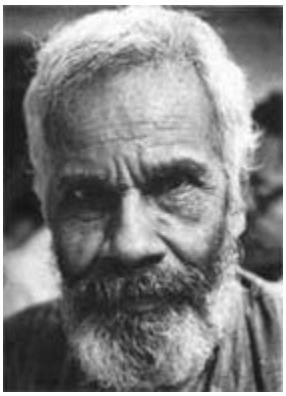

विचारधारा:- नागार्जुन को प्रगतिवादी या मार्क्सवादी विचारधारा से जोड़ा जाता है पर नागार्जुन स्वयं को किसी विचारधारा से बाँध कर नहीं देखते। उनके अनुसार आज प्रत्येक व्यक्ति एवं दल अन्तर्राष्ट्रीय सुख-दुख अथवा व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए कार्य तो करता है पर राष्ट्रीय स्तर पर कोई दायित्व स्वीकारने को तैयार नहीं। कवि समस्त दांव-पेचों को जनता के सामने जाकर रखता है तभी कवि का वास्तविक प्रगतिशील रूप दिखाई देता है। वे एक साक्षात्कार में कहते भी हैं-

''आजकल तो मार्क्सवादी/जनवादी तमाम संज्ञाए हैं। मार्क्सवादी के भी इतने शेड्स हो गए हैं कि

राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय मार्क्सवाद से लेकर चाक मजुमदार और चे ग्वारा तक फैला हुआ है। अब आप किसे सही कहेंगे, किसे गलत। और इस बीच वे चतुर बौद्धिक भी हैं जो छलांग मारकर विदेश चले जाते हैं। वे लोग भी हैं जिन्हें लाभ-लोभ की राजनीति आती है। मैं ऐसा मार्क्सवादी नहीं हूँ ----------मैं स्थानीय घटनाओं से निर्लिप्त होकर मार्क्सवादी नहीं रहना चाहता।" (जागार्जुन संवाद: विजय बहादुर सिंह पृ० 29-30)

नागार्जुन ने अपनी मूल दृष्टि अपने सामाजिक परिवेश से ग्रहण की न कि किसी विचारधारा से। नागार्जुन के दृष्टिकोण को निर्मित करने में एक ओर अपने आस-पास की विपन्नता का तो दूसरी ओर उनकी घुमक्कड़ी प्रवृत्ति का भी योगदान रहा। देश-विदेश घूमकर और विविध संस्कृतियों के साक्षात्कार ने भी उनके दायरे को व्यापक बनाया। बौद्ध साहित्य और दर्शन का प्रभाव तो उन पर इतना रहा कि शून्यवाद के प्रवर्तक 'नागार्जुन' का नाम उन्होंने अपने लिए सहज स्वीकार कर लिया।

नागार्जुन जन कवि हैं अत: राष्ट्रीयता उनके काव्य/साहित्य का मूल है। अन्तर्राष्ट्रीय होने से पूर्व राष्ट्रीय होना वे प्रत्येक के लिए आवश्यक मानते हैं। चाहे कोई किसी भी विचारधारा से तत्व ग्रहण कर परन्तु यदि राष्ट्र उसके लिए सर्वोपरि नहीं है तो वे ऐसी विचारधारा को त्याज्य मानते हैं।

3-विषयप्रवेश:-

नागार्जुन की रचना धर्मिता:- नागार्जुन आधुनिक युग के विशिष्ट रचनाकार हैं। उनकी रचनाधर्मिता का निर्माण जनवादी चेतना के माध्यम से हुआ है. आभिजात्य का प्रदर्शन करने वाले, श्रम-विमुख चिंतन करने वाले वर्ग के विरुद्ध वे सदैव तैनात रहे हैं। उनकी रचनाए, उनके व्यक्तित्व का प्रतिनिधित्व भी करती हैं। वे सदैव पूंजीवादी मानसिकता, सामंतवादी प्रवृति के विरोधी रहे और यही उनकी रचनाओं का मूल स्वर भी रहा। उनकी रचना धर्मिता झुकने और समझौता करने के विरोध से जन्मी है। बुद्धिजीवी कहलाने वाला वर्ग जब अपनी जुबान को सिल कर सत्ता के तलवे चाटने में व्यस्त हो जाता है तो नागार्जुन उसे अत्यन्त भयावह मानते हैं। विनम्रता से समाज का भला नहीं हो सकता। साहित्यकार में विनम्र दर्प का होना अत्यावश्यक है। अपने कविता संग्रह 'हजार-हजार बाँहो वाली' की एक कविता में नागार्जुन अपनी रचनाधर्मिता की ओर संकेत करते हैं जिसके लिए नव रसों को गला कर एक ऐसा अभिनव द्रव तैयार करने की आवश्यकता है जिससे समस्त हिंसा थर्राए और समाप्त हो जाए। ऐसा साहित्य ही आज के युग के लिए परिवर्तनकारी सिद्ध होगा-

नव दुर्वासा शवर-पुत्र मैं, शवर-पितामह
सभी रसों को गला-गला कर
अभिनव द्रव तैयार करुँगा

महासिद्ध मैं, मैं नागार्जुन
अष्टधातुओं के चूरे की छाई में फूँक भरुंगा
देखोगे, सौ बार मरूँगा

हिंसा मुझसे थर्राएगी
मैं तो उसका खून पियूँगा। (हजार-हजार बाहों वाली संग्रह)

रचनाएँ:-

नागार्जुन ने हिन्दी, मैथिली, बंगला, संस्कृत में रचनाएँ लिखीं। उपन्यास, कविता से लेकर निबंध, संस्मरण से होते हुए उन्होंने पत्रकारिता के क्षेत्र में भी अपनी कलम की शक्ति के महत्त्व को स्थापित किया। उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं:-

उपन्यास: बलचनमा, अभिनन्दन, बाबा बटेसर नाथ, इमरतिया, वरुण के बेटे, पारो, दुखमोचन, रतिनाथ की चाची, नई पौध, उग्रतारा, कुम्भीपाक, गरीबदास।

कहानी संग्रह:- आसमान में चंदा तेरे (बारह कहानियाँ)
खंडकाव्य:- भस्मांकुर
निबंध:- अन्नहीनम्-क्रियाहीनम्(संग्रह)
संस्मरण:- एक व्यक्ति एक युग (निराला)
कविता-संग्रह: युगधारा, सतरंगे पंखों वाली, तालाब की मछलियाँ, खिचड़ी विप्लव देखा हमने, हजार-हजार बाँहों वाली, पुरानी जूतियों का कोरस, तुमने कहा था, प्यासी पथराई आँखें, आखिर ऐसा क्या कह दिया मैंने, रत्नगर्भा
मैथिली भाषा में रचनाएँ:- पत्रहीन नग्न गाछ, नवतुरिया, चित्रा, हीरक जयंती
संस्कृत में लिखित:- देश देशकम्, कृषक दशकम्, श्रमिक दशकम्, धर्मलोक शतकम् आदि।
अनुवाद: गीतगोविन्द, मेघदूत।
सम्पादन कार्य:- 'दीपक' (हिन्दी मासिक) 1935 ई०
विश्वबंधु (साप्तहिक) 1942-43 ई०

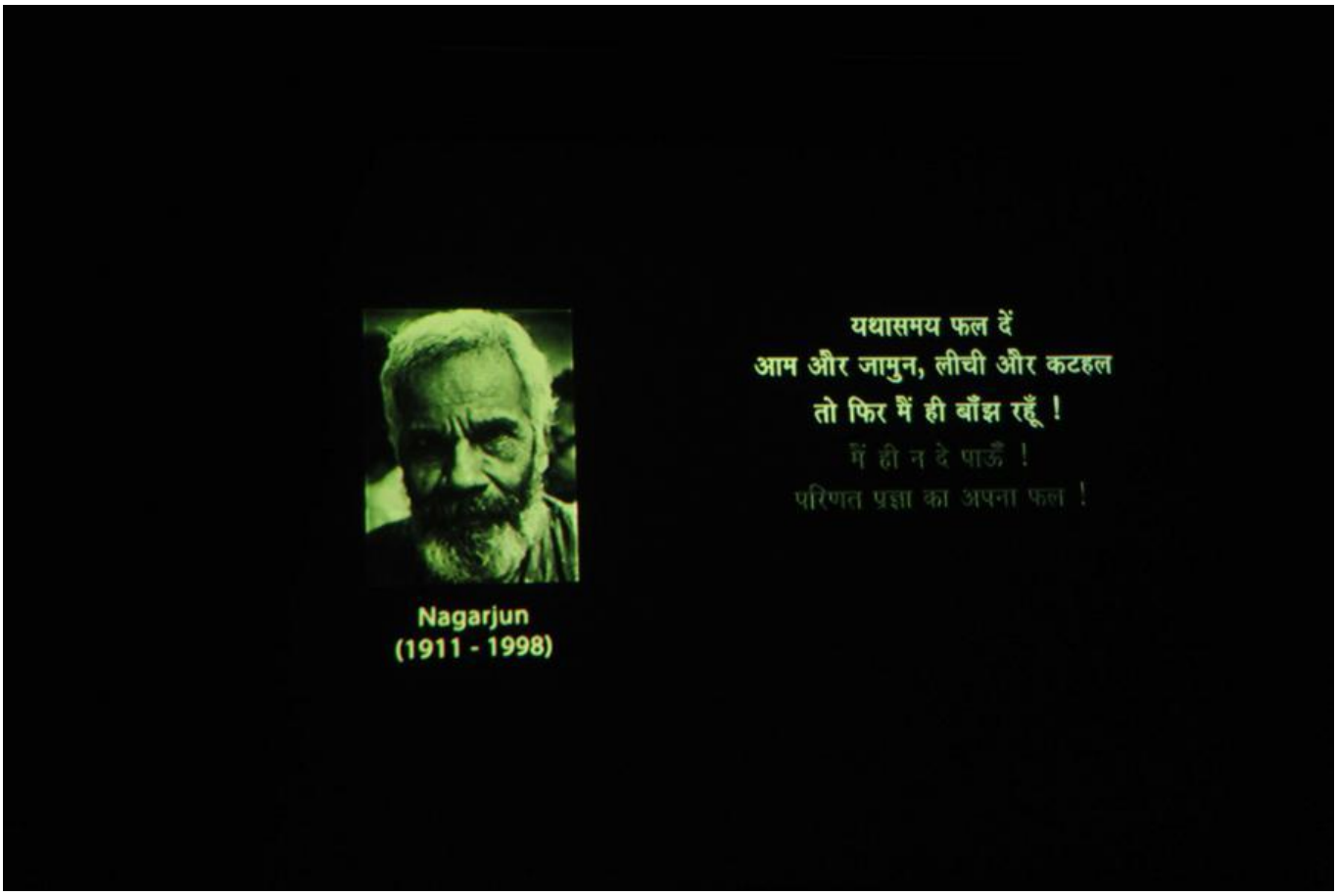

<u>संकलित रचनाओं का परिचय:- (रचना-संग्रह)</u>

इस खण्ड में नागार्जुन की तीन कविताएँ संकलित हैं- सिन्दूर तिलकित भाल, अकाल और उसके बाद, तीन दिन तीन रात।

'अकाल और उसके बाद' कविता 'सतरंगे पंखो वाली' संग्रह से ली गई है। 'सिन्दूर तिलकित भाल' भी इसी संग्रह की रचना है जबकि 'तीन दिन तीन रात' 'तुमने कहा था' संग्रह से ली गई है।

सतरंगे पंखो वाली:- एक तितली के बिम्ब से आरम्भ होता यह संग्रह नागार्जुन के विविध भावों की झांकी दिखलाता है। प्रेम, स्मृति में डूबे क्षणों से लेकर 'वसंत की अगवानी' के लिए तैयार कवि चुटकियाँ लेते हुए फैशन में डूबी नखरंजनियों पर व्यंग्य भी करता है, सौन्दर्य प्रतियोगिता के मध्य निर्णायक की भूमिका पर विचार करता है और सबसे महत्वपूर्ण स्नेह, वात्सल्य श्रंगार की स्मृतियों का साझा करता है। सर्वत्र दनुजदल की समाप्ति की कामना करता हुआ यह संग्रह अमंगल के नाश की कामना करता है। यह नागार्जुन के समस्त संग्रहों का मूल स्वर है-

'हटे दनुज दल

मिटे अमंगल।

जल, थल, नभ....

सर्वत्र शांति हो .....।"

<u>तुमने कहा था:-</u>

नागार्जुन का यह संग्रह 'राजनीतिक टोन' की कविताओं का परिचय देता है। नागार्जुन ने यूँ तो इसमें व्यक्ति केन्द्रित, प्रकृति केन्द्रित कविताएँ भी लिखी है परन्तु उनकी प्रखर सामाजिक चेतना यहाँ विशेष रुप से विद्यमान है। यह रचना संग्रह नेहरू युग के बाद लिखा गया। राजनीतिक स्थितियों में होने वाले परिवर्तन पर विचार करते हुए वे लाल बहादुर शास्त्री का व्यक्ति चित्र भी निर्मित करते हैं और 'पन्द्रह अगस्त;' पर लिखते हुए आजादी की 25वीं जयन्ती को जनता की कष्ट गाथा की रजत जयन्ती मानते हैं।

<u>4-विषय प्रतिपादन:-</u>

रचनाओं का परिचय:-

'अकाल और उसके बाद' कविता अकाल की भयावह तस्वीर दिखाती है। प्राकृतिक विपदाएँ आकर यूँ ही नहीं चली जाती बल्कि अपने पीछे ऐसे भयावह चिन्ह छोड़ जाती हैं जिसका प्रभाव सबसे अधिक आम जन पर होता है। धनिक वर्ग प्रत्येक समस्या से जूझने के लिए राहें खोज लेता है पर विपन्न हालत में जीने को मजबूर वर्ग, जो नित प्रतिदिन कुँआ खोदने और पानी पीने की स्थिति में रहता है, को ही समस्त विपदाओं का शिकार बनना पड़ता है इस रचना (कविता) में कवि ने ऐसे ही विपन्न परिवार को अकाल का सामना करते हुए दर्शाया है। यह निदर्शन/चित्रण विवरणात्मक नहीं है क्योंकि नागार्जुन ने स्वयं अपने क्षेत्र, परिवार में विपन्नता को देखा व अनुभव किया है। नकारात्मक और कुछ हद तक सकारात्मक सी दीखती स्थितियों का एक चित्र भर ही है यह कविता परन्तु दुख दर्द के बीच हल्की सी खुशी को भी अनुभव कर लेने वालों की जीवन्तता को प्रत्यक्ष करने में पूर्णतया सक्षम है।

सिन्दूर तिलकित भाल:- नागर्जुन यायावरी प्रकृति के व्यक्ति थे। ढक्कन, मिसिर, बाबा, वैदेह, यात्री के उपनामों से जाने वाले रचनाकार नागार्जुन को यदि अनन्त पथ का पथिक कहा जाए तो अत्युक्ति नहीं होगी। अपनी इसी प्रवृत्ति और परिवार से मनमुटाव के कारण नागार्जुन परिवार छोड़कर प्रवास के लिए चले गए। विविध दर्शनों, साहित्य का अध्ययन करने पर भी परिवार की मीठी स्मृतियों को उन्होंने कभी नहीं छोड़ा। पत्नी के सिन्दूर लगे माथे के बहाने वे अपनी समस्त स्मृतियों को इस कविता में जी लेते हैं। प्रवास का दर्द वहीं समझ सकता है जिसने इसे अनुभव किया हो। यद्यपि प्रवास में भी व्यक्तियों का समूह मिल ही जाता है परन्तु प्रेम का प्रगाढ़ सम्बन्ध हर जगह नहीं मिलता। आत्मीयता के लिए आतुर मन इस रचना में बार-बार अपनों को याद करता दिखाई देता है

तीन दिन तीन रात:- यह रचना यद्यपि पूर्णिया (बिहार) में एक कर्फ्यू के कारण ज़न जीवन की अस्त-व्यस्तता के बारे में बात करती है परन्तु इसके सरोकार बहुआयामी हैं। हड़ताल, कर्फ्यू के कारण सामान्य जन जीवन में उत्पन्न होने वाली बेचैनी को यह कविता पूरी शिद्दत व मार्मिकता से उद्घाटित करती है। यह कोई भी स्थान हो सकता है- बिहार हो या दिल्ली पर ऐसी स्थिति में सामान्य आदमी को ही समस्याओं का सामना करना पड़ता है और इस स्थिति का लाभ उठाता है- राजनीतिक वर्ग . इस स्थिति को दूर करने के लिए युवा वर्ग बसों को जलाने या सरकारी सम्पत्ति को नष्ट करने का कार्य आरम्भ कर

देता है। विवरण की तरह दिखाई देने वाली यह कविता तीन दिन और तीन रातों की विकलता का वर्णन करती है।

संवेदना/प्रतिपाद्य:- नागार्जुन जनवादी कवि हैं। जन चेतना के प्रति जागरुक रहते हुए ही उनकी रागात्मकता का प्रवाह प्रत्येक हृदय तक पहुँचता है। व्यक्तिगत जीवन से जुड़ी रचनाओं में भी उन्होंने समाज और व्यक्ति के संबंधों पर विचार किया है। इन तीनों कविताओं में प्राकृतिक विभीषिका के कारण छाई भुखमरी परन्तु फिर भी जन-मन में विद्यमान जिजीविषा, पत्नी के प्रति प्रेम और प्रेम के साथ समस्त समाज को याद करने की इच्छा, विभिन्न कारणों से समाज की गतिशीलता का अवरुद्ध होना और इस अवरुद्धता के कारण उत्पन्न होते आक्रोश का जीवन्त चित्रण किया गया है।

अकाल और उसके बाद:- (प्रतिपाद्य/संवेदना)

निर्धन और अभावग्रस्त समाज की जिजीविषा अपूर्व होती है। मरने और जीने के बीच उनके लिए केवल एक ही अन्तर है- पलक के मुँद जाने का। निरन्तर संघर्ष के लिए विवश और संघर्ष के बावजूद किसी सकारात्मक परिणाम की प्राप्ति कि असंभाव्यता को जानता यह वर्ग अपनी जीवटता में विशेष होता है। जिसके पास कुछ भी खोने के लिए नहीं, शायद वह सब कुछ खोकर भी हँसने की शक्ति जुटा लेता है। शायद यही कारण है कि अनेक विपदाएँ आती हैं तो ऐसा लगता है कि सब कुछ समाप्त हो गया परन्तु बार-बार जीवन अपनी राह खोज लेता है। जीने की इच्छा, अदम्य जिजीविषा ही इसका सार है, और यही सार इस कविता में भी दिखाई पड़ता है।

बंगाल के अकाल ने सम्पूर्ण बंगाल को विभीषिका के भयावह रूप से परिचित करा दिया। अकाल एक ऐसी आपदा है जो मात्र भोजन की समस्या, भूख की विकरालता ही नहीं लाती बल्कि अनेक असाध्य बीमारियों को भी निमंत्रण देती है। ऐसी विपदा के कारण मनुष्यों के साथ पशु-पक्षियों को भी भुखमरी का शिकार होना पड़ा। शिथिलता की झाँकी नागार्जुन की इस कविता में प्रत्यक्ष दिखाई देती है। कानी कुतिया, चूहों के साथ अचेतन वस्तुओं की भी पीड़ा यहाँ नजर आती है। सामान्यावस्था में मनुष्य पर ही हर्ष-विषाद का प्रभाव दिखाई देता है पर अकाल ने जीवन को इस कदर उपेक्षित कर दिया है कि 'चूल्हे' और 'चक्की' का संत्रास भी यहाँ उभरने लगता है।

वस्तु की उपयोगिता उसके कार्य से ही सिद्ध होती है। चूल्हे और चक्की की उपयोगिता का सम्बन्ध भोजन की उपलब्धता से है। जिस घर में भोजन न हो वहाँ चूल्हे-चक्की का क्या काम? निरर्थक होते जाने का दंश मनुष्यों के साथ निर्जीव वस्तुओं तक भी फैला दिखाई देता है।

इसके विपरीत ज्यों ही कुछ 'दाने' घर के भीतर आए त्यों ही मानो एक बार फिर घर भर में सम्पन्नता का अहसास भर गया। आंगन से धूआं उठना मात्र भोजन बनने का ही बल्कि सभी के भीतर ऊर्जा के पुनरागमन का भी प्रतीक है।

सुख और समृद्धि के चिह्न सदैव बड़े ही नहीं होते। कवि की इस कविता में छोटी-छोटी वस्तुओं से प्राप्त होने वाले आनन्द का भी संकेत मिलता है। कौए द्वारा पंखों को खुजलाया जाना मानों आलस्य के टूटने का संकेत करता है जहाँ भोजन मिलने पर फिर से कार्य करने के लिए ऊर्जा जाग्रत हो जाती है।

सिन्दूर तिलकित भाल:- (प्रतिपाद्य/संवेदना)

नागार्जुन ने अपनी एक कविता 'प्रतिबद्ध हूँ----------' में लिखा-

"आबद्ध हूँ, जी हाँ, आबद्ध हूँ

स्वजन परिजन के प्यार की डोर में----------
प्रियजन के पलकों की डोर में----------
सपनीली रातों के भोर में----------
बहुरूपा कल्पना रानी के आलिंगन-पाश में-------
तीसरी-चौथी पीढियों के दंतुरित शिशु सुलभ रास में -------
लाख-लाख मुखड़ों के तरुण हुलास में----------"

नागार्जुन की प्रतिबद्धता सबसे है-स्वजन....आत्मीय से लेकर पीड़ा के भागी जन-मन तक। यह जन-मन उनकी प्रत्येक रचना में दिखाई देता है। 'सिन्दूर तिलकित भाल' कविता यूँ तो कवि द्वारा अपनी पत्नी को याद करते हुए रची गई है परन्तु उस याद के बहाने सभी के हर्ष, विषाद, चिन्ता, क्रोध को अभिव्यक्ति दी गई है।

नागार्जुन श्रीलंका प्रवास के दौरान अपने समाज और आत्मीय जन से दूर रहे। स्मृतियों का साझा करते हुए वे अपनी आन्तरिक पीड़ा को अभिव्यक्त करते हैं------
कौन है वह व्यक्ति जिसको चाहिए न समाज।
कौन है वह एक जिसको नहीं पड़ता दूसरे से काज----।
व्यक्ति सामाजिक होकर ही जी सकता है। घोर निर्जन, वैयक्तिक स्तर पर जीना असंभव है। शून्य में टकराकर व्यक्ति समाप्त हो जाता है। रचनात्मक ऊर्जा के प्रतिपालन हेतु सामाजिक अनुभवों से टकराना आवश्यक है। रचनाकार समाज के प्रति प्रतिबद्ध है अत: एकांतवास उसे नहीं सुहाता। वह कहता भी है कि 'पाषाण' के समाज जीने वाले व्यक्ति का जीवन भी कट जाता है परन्तु रचनाकार सामाजिक मन से अपनी शक्ति ग्रहण करता है।। अत: उसके लिए अकेले रहना संभव नहीं है। रचनाकार की छटपटाहट यहाँ व्यक्ति और समूह के संबंधों को जीवन्त करती है।

'तरौनी' का वह ग्राम जहाँ नागार्जुन ने अपना जीवन आरम्भ किया, कमल, कुमुदिनी, तालमखाने का स्वाद लिया, फल-फूल से जीवन-शक्ति प्राप्त की, वह कवि की स्मृतियों में ज्यों का त्यों अंकित है। अपनी पत्नी के लिए 'प्राण' का प्रयोग करते हुए वह अपने मधुर प्रेम को प्रत्यक्ष कर देते हैं। कवि अपने स्थान, जन्मभूमि, समाज का ऋण स्वीकार करता है और उससे ऊर्जा ग्रहण करता है।

कवि जानता है कि अनजान स्थान पर वह सदैव प्रवासी ही कहलाएगा भले ही वह नए स्थान से,निवासियों से सम्बन्ध जोड़ने का प्रयास करे परन्तु उसके आत्मीय, स्वजनों के समान उसके लिए कोई भाव-विह्वल नहीं होगा।

पत्नी के संसर्ग की इच्छा, पैतृक स्थान के सान्निध्य के लिए लालसा विभिन्न आशाओं-आकांक्षाओं में डूबते-उबरते कवि ने अपने हृदय की संवेदना को अपनी रचना में मुखरित किया है।

नागार्जुन जनसाधारन के कवि थे-जमीन से जुड़े रचनाकार। धरती के कवि नागार्जुन लम्बे समय तक

परिवार से दूर रहे परन्तु अन्ततः अपने आत्मीयजनों का प्रेम उन्हें वापस गृहस्थ जीवन में लौटा लाया। उनकी रचना में मिथिला के जीवन का प्रत्यक्ष चित्रण देखा जा सकता है।

तीन-दिन, तीन-रात:- (प्रतिपाद्य/संवेदना)

यह रचना पूर्णिया में, बसों की हड़ताल, सरकारी सेवाओं के बाधित होने पर जन-जीवन की अस्तव्यस्तता पर प्रकाश डालती है । यह अस्तव्यस्तता लोगों के कष्टों को वर्द्धित ही करती है। सामान्य व्यक्ति अपने जीवन में निरन्तर संघर्षरत रहता है। अस्पतालों में हड़ताल के कारण बिलखते बच्चों, रोते परिवारों को देखना एक आम दृश्य है परन्तु इससे हड़ताल करने वालों को कोई अन्तर नहीं पड़ता। नागार्जुन जानते हैं कि सभी सपने देखने वाली आँखें जिनके सपने पूरे नहीं हो पाते और वे उन्हें पूरा करने के लिए संघर्ष करते रहते हैं, ऐसे समय में वही सबसे अधिक कष्ट भोगते हैं।

भाषा शैली:-

नागार्जुन की रचनाओं का शिल्प पूँजीवादी सभ्यता के विरोध से जन्मा है। विष्णु चन्द्र शर्मा नागार्जुन से कविता की भाषा के संदर्भ में प्रश्न करते हैं जिसके उत्तर में जागार्जुन कहते हैं-"वाक्यों या शब्दों का समूह नहीं होती भाषा। जीवन का समूह जरूर भाषा को कह सकते हो ---------" (नागार्जुन एक लम्बी जिरह [पुस्तक]: विष्णु चन्द्र शर्मा पृ० 102)

निज व लोक से उपजी नागार्जुन की भाषा जीवन की भाषा है अतः उनकी भाषा की पहचान करने के लिए दो तत्वों को महत्वपूर्ण माना जा सकता है i) अनुभव ii) परिवेश। नागार्जुन भी मानते हैं कि उनकी कविता में उनके घुमक्कड़ जीवन के अनुभव और परिवेश की समझ, भावुकता, रागात्मक अभिव्यक्ति हुई है। उनकी कविता व्याकरणिक नियमों से नहीं उपजी बल्कि रागात्मकता और विचार के योग से निर्मित हुई है।

नागार्जुन की भाषा एक ओर उनके निजीपन से बनी तो दूसरी ओर लोक से। निजीपन और

लोक अनुभव् के साथ उनकी प्रत्येक रचना किसी विचार बिन्दु को केन्द्र में रखती है। 'अकाल और उसके बाद-------' कविता अकाल के बाद की विभीषिका और अभाव में भी जीने की इच्छा को व्यक्त करती है। वही 'सिन्दूर ------' में निजीपन और परिवेश के प्रति रागात्मकता की झलक दिखाई देती है।

'तीन दिन तीन रात' में विवरणात्मकता है, घटना को आधार बनाकर परिवेश के भीतर उपजते संत्रास को वाणी दी गई है।

विविध काव्य रूप:- कवि नागार्जुन ने विभिन्न रूपों में रचना की है - गल्प,गीत, प्रगीत, आख्यान, छोटी, लम्बी कविता, आभिजात्य को अंगूठा दिखाती, मुँह चिढ़ाती कविताएँ। कविता के बने बनाए नियमों से अलग 'प्रतिष्ठित' कहे जाने वाले वर्गों से अलग उनकी कविताओं में एक मनोरम रमणीयता और जन-मन की साझेदारी देखी जा सकती है।

व्यंग्य : नागार्जुन की कविता 'संघर्ष' की कविता है। उनकी कविता में व्यंग्य अनेक स्थानों पर उभर कर आया है। जातिवाद, वर्णवाद, फैशन, पूँजीवादी मानसिकता पर किए गए व्यंग्य उनकी कविता का विषय बने हैं। परन्तु नागार्जुन का यह व्यंग्य सत्ता वर्ग को अक्सर नहीं भाता इसलिए वह शासक वर्ग से तो दूर रहते हैं पर राजनीति से असंयुक्त नहीं। व्यंग्य अधिकांशत: राजनीतिक व्यंग्य बनकर ही उभरता है-

"लौटे हैं दिल्ली से कल टिकट मार के
खिले हैं दाने ज्यों अनार के
आये दिन बहार के --------"

5-विवेचन

नागार्जुन की कविता में अनेक काव्यरूप मिलते हैं-दोहे, गीत, छंदबद्ध कविता, मुक्तक व लोक धुनों पर रचित काव्य। उनकी भाषा में अनेक बोलियों के शब्द मिलते हैं-संस्कृत, उर्दू, अंग्रेजी से लेकर आंचलिक शब्दों तक, किसान अौर मजदूर की भाषा के शब्द। भाषा बेहद लचीली व प्रवाह पूर्ण है।

विवेचन:- नागार्जुन की कविता मेहनतकश, आम लोगों की कविता है। जनता के संघर्ष और उनकी पीढा का साक्षात्कार उनकी कविता की विषयवस्तु बनकर आया है। भारत की आजादी के बाद भी जन-जीवन में कोई सकारात्मक परिवर्तन नहीं हुआ बल्कि अपनी कही जाने वाली सरकारों ने जनमन को और अधिक संत्रस्त कर दिया। नागार्जुन स्वतंत्र देश की परतन्त्र जनता की पीड़ा को मुखरित करते हैं। शासकों के छल-छद्म का पर्दाफाश करते हैं तथा सामान्य जन के संघर्ष में साथ देते हैं।

6-निष्कर्ष

नागार्जुन की कविताएँ उनके व्यक्तिगत जीवन से लेकर सामाजिक अनुभवों का साझा करती हैं। संस्कृति और सभ्यता के प्रति लगाव इनके काव्य में सर्वत्र दिखाई देता है। मिथिला के क्षेत्र की संस्कृति, आत्मीयता, जन मन के जुड़ी रागात्मक संवेदना कविता की आन्तरिक विषय वस्तु बनकर उभरती हैं। 'सिंदूर तिलकित भाल------' कविता मिथिला की स्मृति को प्रत्यक्ष करती हैं। जनपदों के रूप-गुणानुरूप रखे गए नाम, अन्न-पानी उपजाने वाले खेत, लीचियाँ, तालमखाने, मिथिला के भू-भाग, स्मृति-विस्मृति के स्थान इस कविता के माध्यम से सभी के समक्ष उपस्थित हो जाते हैं।

'अकाल और उसके बाद----' कविता जनता की शक्ति में विश्वास को दर्शाती है। शोषण, अकाल, भयावह प्राकृतिक आपदाओं से ग्रस्त जनता दुख के भीतर भी जिजीविषा के बिन्दुओं को दर्शा देती है।

निष्कर्ष:- नागार्जुन की कविता संघर्षशील मनुष्य के सुख दुख को दर्शाती है। सामन्तों, जमींदारों के विरुद्ध और मजदूरों के समर्थन में रची गई कविताएँ अपने भीतर एक संसार को रचती है। एक ऐसे संसार को जहाँ आम आदमी की पक्षधरता है, जहाँ उसके अदेखे मामूली से स्वप्न हैं, जहाँ संघर्षशील मनुष्य की विजय है, जहाँ तरुणों में जोश है पर वह जोश किसी का नुकसान नहीं करता बल्कि समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने की इच्छा रखता है।

नागार्जुन का यह संसार भारतीय जनजीवन की झाँकी दिखाता है। जन मन की मुक्ति की आकांक्षा करता है, पूंजीवादी शोषण की खिलाफत करता है और ऐसे प्रत्येक कार्य का विरोध करता है जिससे जनता को कष्ट होने की संभावना हो।

7-अभ्यास प्रश्न: (विविध प्रश्न)

नागार्जुन के प्रमुख काव्य-संग्रहों के नाम लिखें।
'अकाल और उसके बाद ----' कविता नागार्जुन के किस कविता संग्रह से ली गई है?
मैथिली संस्कृति अौर सभ्यता की स्मृति नागार्जुन की किस कविता में दिखाई देती है।
काव्य के अतिरिक्त नागार्जुन ने किन विधाओं में रचना की है।
'सिन्दूर तिलकित भाल--------' कविता किसकी स्मृति में लिखी गई है?
'तीन-दिन, तीन-रात------' कविता में किस स्थान पर हुई हड़ताल व कर्फ्यू का चित्रण किया गया है?
'सिन्दूर तिलकित भाल-----' कविता किस काव्य-संग्रह से ली गई है?
नागार्जुन को किस विचारधारा का कवि माना जाता है?
मार्क्सवाद से पूर्व नागार्जुन पर किस विचारधारा का प्रभाव था?
नागार्जुन का वास्तविक नाम बताइए?
मैथिली भाषा में नागार्जुन ने किस नाम से कविताएँ लिखीं?
बाबा नागार्जुन किन-किन अन्य नामों से जाने जाते हैं?

8-रचनात्मक प्रश्न:-

'नागार्जुन जन-कवि हैं-----' कथन का आशय स्पष्ट करें।
राजनीतिक व्यंग्य इनकी (नागार्जुन) कविताओं में किस प्रकार उभरकर आया है, स्पष्ट करें।
"नागार्जुन की कविता सपाट बयानी की कविता है"कथन से आप सहमत हैं या असहमत और क्यों?
नागार्जुन का मार्क्सवाद को लेकर क्या दृष्टिकोण रहा है- स्पष्ट करें।
'सिंदूर तिलकित भाल' कविता की विषयवस्तु स्पष्ट करें।
नागार्जुन की भाषा पर टिप्पणी करें।
'तीन-दिन, तीन-रात' कविता की विषयवस्तु समझाइए।

नागार्जुन प्रकृति-प्रेमी,स्वानुभूति के धनी, किसानों-मजदूरों के कवि हैं----' कथन से क्या आप सहमत हैं?

9-रचनात्मक योगदान:-

क्या आपने बाबा नागार्जुन के सभी रूपों का अध्ययन किया है? क्या आप जानते हैं कि नागार्जुन की रचना धर्मिता मात्र राजनीतिक व्यंग्य, किसानों-मजदूरों के समर्थन तक ही सीमित नहीं है बल्कि बच्चों की दुनिया तक भी उनका विस्ता है। जीवन की आस्था और विषम परिस्थितियों में जीने की प्रेरणा उन्हें बच्चों को देखकर ही मिलती है जैसे-

अंगूठा चूसती है नवजात बच्ची,
खिड़की से लटका दिया है लाल खिलौना।"

आप नागार्जुन की ऐसी ही बच्चों व प्रकृति पर आधारित आस्थापरक कविताओं की खोज कीजिए और हमें भी बताइए।

10-संदर्भ ग्रंथ:-

नागार्जुन संवाद: विजय बहादुर सिंह
नागार्जुन की कविता: अजय तिवारी
नागार्जुन: धनंजय वर्मा
नागार्जुन की कविता में सौन्दर्य बोध का स्वरूप: डॉ० महेश प्रसाद शुक्ल
तुमने कहा था (संग्रह):नागार्जुन
सतरंगें पंखों वाली(संग्रह): नागार्जुन